IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

भूपेन हजारिका के गीतों के विविध पक्ष

उर्मिला भगत (पी.एच.डी शोधार्थी)

हिन्दी विभाग कॉटन विश्वविद्यालय, असम

1. प्रस्तावना- डॉ. भूपेन हजारिका का व्यक्तित्व किसी परिचय का मुहताज नहीं है। असम के जन-जन के दिलों पर राज करने वाले हजारिका का जन्म 8.9.1926ई. में सदिय में हुआ था। इनके माता-पिता नीलकांत और शांतिप्रिय थे। दस संतानों में सबसे बड़े हजारिका को संगीत से लगाव अपनी माता के कारण हुआ। असमिया संगीत की शिक्षा जन्म घुट्टी के रूप में दी गई थी। बचपन में ही हजारिका ने अपनी पहली गीत लिखा और दस वर्ष के आयु में उसे गया। साथ ही बारह वर्ष के आयु में असमिया चलचित्र के दूसरी फिल्म श्इंद्रमालतीश के लिए गाना गाया।

हजारिका ने करीब 13 साल के आयु में तेजपुर से मैट्रिक की परीक्षा पास की। आगे की पढ़ाई के लिए वे गुवाहाटी गए। 1942 में कॉटन कॉलेज से इंटमीडिएट किया। 1946 में हजारिका ने बनारस विश्व विद्यालय से राजनीति विज्ञान में एम.ए किया। आगे के पढ़ाई के लिए न्यूयार्क स्थित कोलंबिया विश्वविद्यालय से उन्होंने पी.एच. डी की डिग्री प्राप्त की। हजारिका गीतकारए संगीतकार और गायक के समांगम थे। वे अच्छे गीतकार होने के साथ ही असमिया भाषा के कविए फिल्म निर्माता, लेखकए राजनेताए अध्यापक और असमिया जाति और संस्कृति के महानायक थे। उन्होंने गुवाहाटी विश्वविद्यालय में अध्यापक के रूप में कुछ समय तक काम किया। उसके बाद वे कलकत्ता चले गये जहाँ वे एक सफल संगीतकारए गीतकार और गायक के रूप में प्रतिष्ठित हुए।

2. अध्ययन का महत्व : इस अध्ययन के द्वारा हजारिका के गीतों में व्यक्तिगत प्रेम, यथार्थ, मानव वेदना , देश-प्रेम, जैसे गुणों को सामने लाना है। क्योंकि एक गीत कार का उद्देश्य केवल मनोरंजन करना नहीं होता, बल्कि मानवता के प्रति उसके भी कुछ कर्तव्य होते हैं जिसे हजारिका जी ने बखूबी निभाया है।

3. अध्ययन का शीर्षक : अध्ययन का शीर्षक है *भूपेन हजारिका के गीतों के विविध पक्ष।*

4. अध्ययन का उद्देश्य: इस अध्ययन के द्वारा भूपेन हजारिका के गीतों के विभिन्न पक्ष को प्रकाश में लाना और हिन्दी के पाठक जो असमियां भाषा नहीं समझते उन्हें हजारिका के बहुआयामी प्रतिभा से अवगत कराना तथा आज उनके गीतों की प्रासंगिकता को सामने लाना ही अध्ययन का उद्देश्य है।

5. अध्ययन की पद्धति और व्यवहरित उपकरण- प्रस्तुत पत्र में अध्ययन की पद्धति विश्लेषणात्मक और आलोचनात्मक है। इस विषय के अध्ययन में भूपेन हजारिका के गीतों, पत्र- पत्रिका, ग्रंथों, विद्वानों, और इंटरनेट से सहायता लिया गया है।

6. विश्लेषण एवं निर्वचन - भूपेन हजारिका के गीतों में अपार जादू शक्ति है। साहित्यरथि लक्ष्मीनाथ बेजबरूवा ने लिखा है :

> "मैं दंग रह गया और अपने आसन से उठ कर उसके पास आ कर उसे चूम लिया। कलकत्ता में ऐसे ही एक बालक को देखा था। जिसका नाम था मास्टर मदन। " (स.पं 2011.11)

वही बालक आगे चलकर भूपेन हजारिका नाम से सुप्रसिद्ध हुआ ।

हजारिका के गीतों के विविध पक्ष :

6.1 **मानव वंदना** – भूपेन हजारिका के अधिकांश गीतों का मूल स्वर मानव है। उनके गीतों में मानवतावादी का स्वर प्रमुख रूप से मिलता है। मानव के प्रति प्रेम, आस्था, सहानुभूति, दया , ममता इनके हिदय में अपार है। जिसका उदाहरण उनका गीत 'मानुहे मानुहर बाबे' में देखा जा सकता है-

"मानुहे मानुहर बाबे

यदिहे अकणो नाभावे

अकणि सहानुभूतिरे

भाबिब कोनेनो कोवा समनिया ।" (सं शईकिया 2014.14)

विभिन्न धर्म, जाति ,भाषा के बीच इन्होंने समन्वय के विराट चेष्टा की जिसमें अपार सफलता मिल। उनका ह्रदय प्रांतियता, राष्ट्रीयता की संकीणता से ऊपर उठ कर विश्व बंधुत्तव के भाव से सराबोर था। इसलिए वे अपने आप को यायावर के रूप में देखते हैं । और पूरे विश्व में घुमते रहते हैं :

"बारे - बारे देखो

बाटर मानुहो आपोन हैछे बार

सेये मई यायावर". (शईकिया2015

देश के जनगण को प्रेम करने वाले , मानवता की अमृत-वाणी से संपूर्ण विश्व को सौंदर्यमय करने की चाह लेकर मानवता का जयगान करने वाले भूपेन हजारिका का ह्रदय दूसरों के दुःख- दर्द को देख कर मर्माहत हो उठता था। ब्रह्मपुत्र के दोनों ओर रहने वाले हजारों जनता के दुःख - दर्द को देखकर भी ब्रह्मपुत्र निःशब्द तथा नीरव क्यों बहता है वह ब्रहमपुत्र से बार-बार प्रश्न करते हैं-

"विस्तीर्ण पाररे हाहाकार शुनिओ

नि शब्दे नीरवे बुढा लुइत तुम

बुढा लुइत बोवा किया" (शईकिया.2015.16)

हजारिका मानव के नैतिकता और मानवता का पतन होते देख अत्यन्त ही दुःखी थे। जिसकी अभिव्यक्ति 'ओ गंगा बहती हो क्यों ?' गीत के माध्यम से व्यक्त किया है :

"नैतिकता नष्ट हुई मानवता भ्रष्ट हुई

निर्लज भाव से बहती हो क्यों

इतिहास की पुकार करे हुंकार

ओ गंगा की धार" (वर्मा. 2015. 4)

हजारिका ने *आमि असमिया नहओ दुखिया* नामक गीत के द्वारा संकीर्ण जातीवादी मनोभाव त्यागकर विश्व दरबार में अपनी पहचान बनाने के लिए असमिया जनता को आहवान किया है। भूपेन हजारिका ने स्वयं कहा है :

> "सम्पूर्ण पृथवी पर यदि एक भी मनुष्य मुझे इस रूप में याद रखे कि मैनें मनुष्य के लिए मनुष्य का गीत गाया था, तो मैं धन्य हो जाउंगा।" (दत्त 2014. 129)

6.2 **स्वदेश – प्रेम** – भूपेन हजारिक वास्तव में सच्चे देश भक्त थे। उन्होंने देश के प्रति अपने कर्त्वय को निभाया। हजारिका ने स्वदेश प्रेम से ओत-प्रोत अनेक गीत गायें हैं। सन् 1857ई. के 'सीपाही विद्रोह' में असम के दो स्वतंत्रता संग्रामी मणिराम दीवान और पियलि फुकन ने अपना जीवन स्वदेश के लिए

निछावर किया था। मणिराम देवान नामक फिल्म में 'बुकु हम हम करे' नामक गीत गा कर अंतराष्ट्रीय ख्याति प्राप्त की :

"बुकु हम हम करे
मोर आई
कोने निद्रा हरे
मोर आइ
पुत्र है मइ कि मते तरो
आइ तोरे है मइ मेरा" (शईकिया. 2015, 8)

मातृभूमि के लिए अपने प्राणों का बलिदान देने वाले वीर शहीदों को श्रद्धा सुमन अर्पित करते हुए उनके महत्व को स्थापित किया है :

"शहीद प्रणामो तोमाक
तुमियेटो बूकु पाती दिला
भारतीय नुमली जीक बचाबलै
तुमियेटो मृत्यु बरिल ।" (श्रशईकिया.2015.8)

6.3 साम्यवादी विषयक गीत – हजारिका ने अनेक गीत साम्यवादी दृष्टिकोण से लिखा है। वे मनुष्य को मनुष्य के रूप में देखना चाहते थे। समाज में वयाप्त वर्ग, जाति, धर्म ,प्रांत, राष्ट्र के नाम पर व्याप्त भेदभाव को देख कर दुःखी थे। उन्होंने उसका विरोध अपने गानों, कविताओं के माध्यम से करते हुए वसुधेवकुटूम्ब भाव की स्थापना करने का सफल प्रयास किया। वे एक साम्यवादी समाज का गठन करना चाहते थे। जिसकी अभिव्यक्ति इस गाने के माध्यम से हुआ है :

"हरिजन, पाहारी, हिन्दू, मुस्लिमर
वाड़ो कास, कछारी, आहुमर
अन्तर भेदि मोइ ......
भेदाभेदर प्राचीन भागि
खमयर खरग रचिम। " (पूजारी 2007:27)

डॉ. अर्चना पूजारी के अनुसार,

> *"हाजारिका असम, भारत के सीमा में बंध कर नहीं रहे बल्कि विश्वमानव के बीच पहुच गये हैं"* / (*पूजारी* 2002 :27)

भूपेन हजारिका के गीतों में जीवन के लिए संघर्ष करने वाले मजदूरों , किसानों तथा असहाय निरीह लोगों के प्रति गहरा संवेदना दिखाई पड़ती है। जो व्यवस्था तथा आधुनिकता से उपजी परिस्थितियों के शिकार होते जा रहे हैं । हजारिका निरीह और कमजोर लोगों के बारे में सोचते हैं जिनके बारे में कोई नहीं सोचता :

"विस्तार है अपार, प्रजा दोनों पार
निःशब्द सदा, ओ गंगा तुम
गंगा बहती हो क्यों
* * * *
समग्रामी बनाती नहीं हो क्यों
व्यक्ति रहे व्यक्ति केंद्रित, सकल समाज व्यक्त रहित

निष्प्राण समाज तोड़ती नहीं हो क्यों

स्त्रोतस्वनी तुम न रही, तुम निश्चित चेतना

प्राणों से प्रेरणा बनती न क्यों ?" (सं. शइकिया 2014 : 04)

6.4 जनचेतना – हजारिका के गीतों में जन चेतना का स्वर मुख्य रूप में गुंजीत हुआ है। वे शोषित और पीड़ित जन के गीतकार थे। उन्होंने अपने गीतों के माध्यम से सधारण जनता के अन्दर चेतना जाग्रीत करने का सफल प्रयास किया। उनके ह्रिदय में समाज में फैले तमाम दुराग्रर जैसे – धर्म के नाम पर, जाति के नाम पर, वर्ग के आधार पर, प्रांत के नाम पर जो भेद-भाव और विभिन्न प्रकार के अंधविश्वासो को समाप्त करने के लिए सचेतन रहे हैं। मजदूरों, किसानों, चाय बगान के श्रमिकों के लिए अनेक आन्दोलन धर्मी क्रांति का आह्वान किया है। 'गंगा बहती हो क्यों?' के माध्यम से साधारण जन को जागृत किया है :

"अग्नियुगर फिरिङ.ति मइ

नतुन असम गढ़िम

नतुन भारत गढ़िम

सर्वहार सर्वस्व

पुनर फिराइ आनिम" (सं. शर्मा2012:43)

इस प्रकार हजारिका पूंजीवादी प्रधान समाज को नष्ट कर सर्व हार वर्ग का महत्व स्थापित करना चाहते हैं। जहां सब समान हो। हजारिका नवयुवकों को जागृति करते हुए कहते हैं :

"तुमि नतुन पुरूष तुमि नतुन नारी

अनागत दिनर जाग्रत प्रहारी।" (दत्त 2014:111)

हमारे देश में किसान और मजदूर जो अन्न का देवता हैं उन्हें ही भूखा सोना पड़ता है कैसी विड़म्बना है इस देश के पालनहारों का। वे सदियों से ही अपने अधिकारों से वंचित रहे हैं, सदियों से शोषण तथा उत्पीड़न का शिकार होते आ रहे हैं। सत्ता और पूंजीवादी व्यवस्था के चक्की में पीसते आ रहे हैं। हजारिका ने इनकी मुक्ति के लिए आह्वान किया है, क्योंकि जब सधारण जनता जागृत होगी, तो बड़े- बड़े राजा-महराजाओं का सम्राज्य नष्ट हो जायेगा। :

"हे डोला , हे डोला , हे डोला

हे आघे बाघे रास्तों से

कंधों लिए जाते हैं राजा महाराजाओं का डोला

हे डोला हे डोला , हे डोला

हे देहा जलाइ के पसीना बहाइके , दोड़ते हैं डोला

कांधों से जो फिसला नीचे जा गिरेगा

राजाओं का आसन न्यारा

नीचे जो गिरेगा डोला

हे राजा महाराजाओं का डोला" (दत्त 2014:79

हजारिका इस संसार के रंग रूप देख कर दुःखी हैं क्योंकि इस संसार में मेहनत करने वाले लोग बेघर हैं। जिन गगन चुंबीमहलों को बनाने के लिए मजदूर अपना खुन-पसीना ही नहीं बल्कि आपना जीवन तक दाव पर लगा देते हैं। उन्हें रहने के लिए झोपडी भी बड़े ही भाग से मिलता है। हमारे समाजन में अमीरी और गरीबी का जो खाई है उसे देख हजारिका का ह्रदय रो पड़ता है :

"मैंने देखा है कई गगनचुंबी महलों की कतारें

उसकी परछाई में देखे हैं, बेघर बार कई नर-नारी

मैंने देखा है कई घरों में सजे हैं बाग़ -बागीचे

और ये देखा फूलों की पंखुड़िया पड़ी हैं असमय नीचे

अनेक देशों के घरों के दुखो को देख बहुत हूँ मैं चिंतित

बहुत कुछ देखा अपने घरों में सभी पराये

इसीलिए मैं यायावर।" (शईकिया. 2015.6)

हजारिका ने अपने गीतों को जनसंर्पक के माध्यम के रूप में तथा समाज परिर्वतन के साधन के रूप में प्रयोग किया है।

6.5 लोक संस्कृति – भारतवर्ष अपने सभ्यता और संस्कृति के लिए पूरे विश्व में अद्विती स्थान रखता है। नाना जाति, धर्म के लोग यहां रहते हैं। असम भूमि भी नाना धर्म, जाति का मिलन भूमि है। विभिन्न जाति- जनजाति के मिलन से असमिया संस्कृति का निर्माण हुआ है। हजारिका ने अपने गीतों के माध्यम से असमिया जाति संस्कृतिका सच्चा तस्वीर दुनिया के सामने उभारा है:

"नाना जाति - उपजाती

रहणीया कृष्टि

आकोवालि लोई होइसिल सृष्टि

ऐ मुर असम देश।" (पूजारी 2002: 39)

असम कृषी प्रधान राज्य है। कृषि को केन्द्र में रख कर यहां कई उत्सव मनाया जाता है। जिसमें बहाग बिहू, कातिक बिहू और माघ बिहु विशेष रूप से लोकप्रिय हैं। हजारिका ने बिहू को लेकर अनेक गीत गायें हैं। बहाग बिहू को उन्होंने असमिया जाति का जीवन रेखा माना है :

"नहय वहाग एटो माह

असमिया जातिर आयू रेखा

गन जीवनर हे सास" (सं. शर्मा 2012:273)

असमिया जाति संस्कृति विशेष कर जनजीवन से संबंधित साज- सज़ा, गमछा, रेशमी रिहा मेखला, चादर का जीक्र अपने गानों में किया है। असमिया संस्कृति में पान-ताम्बूल का विशेष भूमिका है :

"काकिनी तामूलर शुवनी कोई पान

पद्रूली मुखते आछे माईजान" (सं. शर्मा 2012:275)

नाम घरों में, गुरु के आसन, सत्र के सिंहासन पर गमछा का विशेष प्रयोजन होता हैं। और बिहू में युवक-युवतियों के सर और कमर में गामछा बांधने का रिवाज हैं हजारिका ने ब्रह्मपुत्र को गामछा के रूप चित्रित किया है :

"अकूवा पकूवा गामचा एखन

जेन बालित मेलि बरहमपुत्र

खीतत रदरे पूवाईछे।" (हजारिका2008:66)

असम के चाय बगानों में करम पूजा का विशेष महत्व है। जिसपर 'असम देखर चाय बागिचार' नामक गीत गाया है :

"भादर माहत धम् धमा धम्

करम पूजा धम् धमा धम्

बाजाउ आमि धम् धमा धम्

मादक चाउताली" (*हजारिका* 2008:55)

6.6 प्रकृति चित्रण- असम अपने मनोरम प्रकृति के लिए जाना जाता है। हजारिका जी ने अपने गानों के माध्यम से प्रकृति का गान किया है। असम पहाड़ों, पर्वतों, नदी, झील, बाग़ - बगीचों से भरा हुआ है। हजारिका ने किपली नदी का मनवीकरण करते हुए उसका चित्रण एक चंचल और सुन्दर युवती के रूप में किया है :

"कपिली कपिली गाभरू सूवाली

चंचला नाई तूर मान ।

कपिली कपिली देहार भाजे भाजे

मिठा यौवनर गान।" (*सं. शर्मा* 2012:)

हजारिका ने अपने गानों में काले मेघों और वर्षा का सुन्दर चित्रण किया है -

"हूँ हूँ धूमूहा आहिलेउ

आकाखत कला मेघे छानिलेउ

रिम झीम बरूखून परिलेउ

तुमी जेन थाका मूर काखते ।" (*दत्त* 2014:71)

6.7 प्रेम मूलक गीत - सन् 1948-49 सन् में गुवाहाटी अनातार(आकाशवाणी) केन्द्र में नौकरी करते हुए बहुत सारे प्रेम मूलक गीत गायें थे। कुछ लोगों का मानना है कि शिलंग केंद्र से उनकी प्रेयसी उनके लिए प्रेम भरा गीत गाती थी और भूपेन हजारिका उन गीतों का उत्तर गीत लिख कर गाते थे जैसे- अलिया बलिया मन, खूर नगरीर खुरर कुमार, मुर मरमे मरम विचारी जाय आदि गीत ऐसे ही गीत हैं।

हजारिका के प्रेममूलक गीतों कोमलता तो है पर प्रेम का निवेदन है। उनके अधिकतर गीतों में वे अपनी प्रेयसी से क्या और कैसी प्रेम चाहते हैं। उसका उल्लेख किया है :

"निष्ठूर जीवन खमग्रांमत

विचारू मरमर मात एखार

जिरनी लउ यदि तुमार तृनत

मय जेतिया एई जीवनर

माया एरी गूचि जाम

आशा करू मुर चितार काखत

तुमार खहारी पाम।" (*दत्त* 2014:134)

हजारिका का वैवाहिक जीवन दूर्भाग्य से सुखमय नहीं रहा है। उनकी आशा निराशा में बदल गई। वे फिर से जीवन संग्राम के पथ पर अकेले चल पड़े :

"मुर मरमे मरम विचारी जाय , जाय
बारिखार केचा बाने
मुरेई कारने आने
नतूनरे बरे ने
यूगर बतरा लोइ।" (दत्त 2014:138)

7. उपलब्धियाँ

7.1 हजारिका मानवता के महान उपासक हैं, वे मानव को मानव की दृष्टि से देखने के पक्षपाती हैं।

7.2 हजारिका मन तथा प्राण से एक वर्ग विहीन समाज, की कामना की है। वे जाति-पाति, ऊंच-नीच के भेदभाव को त्याग कर समाज में समानता लाना चाहते थे ।

7.3 हजारिका ने अपने संगीत को जनसंयोग के माध्यम के रूप में तथा समाज परिवर्तन के साधन के रूप में प्रयोग किया है।

7.4 अतित के गौरवगान के द्वारा सधारण जनता को जागृत किया है। ताकि वे मातृभूमि की रक्षा के लिए अपने प्राणों का आहुति दे ने के लिए तत्पर हो।

7.5 हजारिका ने गानों के माध्यम से असम की लोक संस्कृति, भाषा, लोक विश्वास, लोकगीत से सबको परिचित करवाया।

7.6 हजारिका संपूर्ण मानव से प्रेम करते थे, वे दूसरों के दुःख को अपना बना लेते थे। लेकिन उन्हें व्यक्तिगत जीवन में प्रेम का सुख नहीं मिला।

7.7 हजारिका ने असम की प्रकृति की सौंदर्य का सुन्दर चित्रण अपने गानों के माध्यम से किया है।

8. निष्कर्ष – भूपेन हजारिका किसी परिचय का मुहताज़ नहीं हैं। वे असम और भारतवासियों के दिल में धड़कन की तरह रहते हैं। आज हजारिका का महत्व जाति और देश की सीमा को तोड़ कर विश्व में स्थापित हो गया है ।हजारिका अपने गीतों के द्वारा असम के लोक संस्कृति, भाषा, असम की प्रकृति तथा असमिया जाति के महत्व को भारत के कोने -कोने तक ही नहीं पहुंचाया बल्कि पूरे विश्व में असम तथा भारत की महत्व को स्थापित किया है। हजारिका केवल कलाकार ही नहीं हैं, बल्कि वे मानवता के महान उपासक हैं। साधारण एवं हाशिए का जीवन जी रही जनता की पीड़ा ,वेदना तथा उनके जीवन की य़थार्थ से हमें अवगत कराये हैं। हजारिका जन - जन के गायक हैं ।

हजारिका ने अपने गानों के द्वारा साधारण जन का केवल मनोरंजन ही नहीं किया बल्कि जनता को जागृत भी किया। ताकि मातृभूमि की रक्षा के लिए देशवासी अपने प्राणों की आहुति दे सके। साधारण जनता की यथार्थ स्थिति, शोषण, समाज में फैले तमाम अंधविश्वास, छूवाछूत, भेदभाव, असमानता को गानों के माध्यम से जन - जन तक पहुंचाया तथा समाज में समानता लाने का सफल प्रयास किया।

हजारिका का एक-एक गीत एक सार्थक उपन्यास के समान है। मानव मुक्ति का स्वप्न उनके गीतों में उसी प्रकार से विद्यमान है। जिस प्रकार एक सफल और कालजयी उपन्यास में एक संपूर्ण युग, व्यक्ति, जाति, देश, समाज संपूर्ण रूप में मूर्तिमान हो उठता है। भूपेन हजारिका के गानों में भी संपूर्ण युग, समाज, व्यक्ति, जाति और देश जीवन्त हो उठा है।

इसीलिए हजारिका और उनके गाने देशातीत और कालातीत बन चुके हैं। शंकरदेव और माधव देव के बाद शायद भूपेन हजारिका ही असम के सांस्कृतिक और मानवता के महान पूजारी हैं। माँ शारदा का वरद पुत्र हजारिका के बहुमूल्य देन के लिए असम ही नहीं बल्कि संपूर्ण भारतवासी ऋणी हैं।

8.

संदर्भ ग्रंथ सूची-

1 शर्मा, शैलेनजीत (सं.) डॉ. भूपेन हजारिका के गीत और कविता का विश्लेषणात्मक आलोचना.प्रथम. गुवाहाटी..चन्द्रप्रकाशन , 2012

2 हजारिका, सूर्य. (सं.) डॉ. बूपेन हजारिका के समग्र गीत . गुवाहाटी .. वाणी मंदिर ,2008

3 दत्त, दिलीप कुमार. भूपेन हजारिका के गीत और जीवन रथ . गुवाहाटी.. वनलता,2011

4 दत्त, दिलीप कुमार. भूपेन हजारिका के गीत और जीवन रथ, गुवाहाटी..वनलता, 2014

5. रतन, ओझा. (सं.) भूपेन हजारिका . गुवाहाटी.. असम प्रकाशन परिषद, 2013

6 पूजारी, अर्चना. डॉ.बूपेन हजारिका के गीतों का मूल्यायन. गुवाहाटी.. वाणी मंदिर 2002

7 शईकिया, क्षीरदा कुमार(सं.) द्विभाषी राष्ट्रसेवक . असम राष्ट्रभाषा समिति.6अंक 8नवंबर ,2014

8 दत्त, दिलीप कुमार. डॉ. भूपेन हजारिका की रचनावली भाग 2. गुवाहाटी . वाणी मंदिर ,2008

उर्मिला भगत